P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-6* February- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गांधी जी और पं॰ दीनदयाल उपाध्याय : एक विश्लेषण

प्रीतम सिंह
प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कनीपला
कुरुक्षेत्र, हरियाणा

सारांश

देश में यदि आज कोई सबसे बड़ा ब्रांड है तो संभवतया वह राष्ट्र पिता गांधी जी का नाम ही है। गांधीजी का अहिंसा का सिद्धान्त आज पूरे विश्व में जाना जाता है परन्तु अहिंसा गांधी जी के दर्शन का आया मात्र था, उनके दर्शन के दूसरे आयामों को भुला दिया गया है। उनके आर्थिक विचारों को भुला दिया गया और पाश्चात्य मॉडल को अपना लिया गया जिससे भारत की आर्थिक स्थिति बद से बदत्तर होती चली गयी। उनके आर्थिक विचारों का प्रभाव पं॰ दीनदयाल उपाध्याय जी पर साफ–साफ दिखाई पड़ता है। गांधी जी के और पं॰ दीनदयाल उपाध्याय जी के आर्थिक विचारों को अगर आज भी क्रियान्वित किया जाता है तो भारत से गरीबी उन्मूलन के लिए काफी लाभकारी होगा। पं॰ दीनदयाल उपाध्याय जी सही अर्थों में गांधी जी के वैचारिक उत्तराधिकारी थे जिन्होंने गांधी जी के विचारों का अध्ययन किया और उन्हें अपने दर्शन में आत्मसात किया। प्रस्तुत शोधपत्र उनके विचारों का अध्ययन करता है।

मुख्य शब्द : गांधी जी, पं॰ दीनदयाल उपाध्याय जी, स्वदेशी, पाश्चात्य, चरखा, शूमाकर

प्रस्तावना

गांधी और गांधी की विचारधारा ने स्वतंत्रता पश्चात् के भारत के राजनैतिक परिदृश्य को प्रभावित किया है। स्वतन्त्रता के पश्चात् कांग्रेस ने स्वयं को गांधी जी की विचारधारा का उत्तराधिकारी घोषित किया और गांधी जी के विचारों पर चलने का प्रण लिया। परन्तु आज आजादी के 70 वर्षों के बाद जब हम भारत का विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि कांग्रेस ने भारत के विकास के लिए गांधी जी की विचारधारा को छोड़कर पाश्चात्य मॉडल को अपनाया। इन्हीं दिनों में भारतीय कुटीर उद्योग एक धीमी मौत मर गए क्योंकि नेहरू जी का प्रेम केवल अधिक पूंजी वाले भारी उद्योगों में अधिक था। गांधी जी के दर्शन को उनके दत्तक पुत्रों ने बहुत पहले भुला दिया था, उनके दर्शन को पुनर्जीवित किया पं॰ दीनदयाल उपाध्याय ने।

पं॰ दीनदयाल उपाध्याय जी भी गांधी जी की तरह ही राजनीतिज्ञ, विचारक, दार्शनिक एवं मानवतावादी थे। उनमें और नेहरू जी में बड़ा वैचारिक अन्तर था। नेहरू जी अपनी पाश्चात्य शिक्षा के कारण पाश्चात्य संस्कृति को ही सही मानते थे। उपनिवेशी अंग्रेजों की तरह नेहरू जी भी यही मानते थे कि पाश्चात्य संस्कृति ही सर्वश्रेष्ठ और सार्वभौमिक है और बाकी संस्कृतियां विकृत हैं। उन्होंने अपनी इसी सोच को ही आर्थिक और राजनीतिक मामलों में आगे बढ़ाया। उन्होंने प्रयास किया कि पश्चिमी भारी उद्योग भारत में भी लगें और सफल हों। यद्यपि इस मामले में नेहरू जी की सोच पर प्रश्न नहीं उठाए जा सकते, परन्तु पश्चिमी मॉडल भारत वर्ष को समृद्ध करने में सर्वथा असफल रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोधपत्र के अध्ययन का उद्देश्य गांधी जी और पं॰ दीनदयाल उपाध्याय जी के आर्थिक दर्शन का अध्ययन करना है। पण्डित जी और गांधी जी दोनों ही आर्थिक उत्थान के लिए एक स्वदेशी मॉडल विकसित करने के पक्षधर थे। उन्होंने यह बात महसूस की कि पाश्चात्य मॉडल जो कि पूंजीवादी है, वह भारत के लिए अच्छा नहीं है। गांधी जी का चरखा उनके आर्थिक दर्शन का प्रतीक था। चरखे का अर्थ था – ग्रामीण भारत की सबलता और आर्थिक उत्थान। चरखा ग्रामीण कुटीर उद्योगों का प्रतीक था, जिन्हें अगर विकसित किया जाता तो पर्यावरणं, गाँव से शहर की ओर पलायन और आर्थिक विषमतां जैसी समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता था। प्रस्तुत शोधपत्र में गांधी जी और पं॰ दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों की मीमांसा की गई है और दर्शाया गया है कि स्वदेशी मॉडल ही भारत की उन्नति के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

साहित्यावलोकन

दीनदयाल जी के एकात्म मानवदर्शन पर बहुत–सा काम हुआ है। उनके एकात्म मानवदर्शन पर कई पुस्तकें भी लिखी गई हैं। परन्तु उनका आर्थिक दर्शन आज तक उपेक्षित ही रहा है। किसी भी शोधार्थी ने गांधी जी के दर्शन का दीनदयाल जी के चिंतन पर प्रभाव नहीं देखा है। केवल कुछ ही लेखकों ने ही दीनदयाल जी के दर्शन और आर्थिक चिंतन के बारे में लिखा है। इनमें प्रमुख हैं – आशीष रावत, अमरजीत सिंह, हरीश दत्त आदि हैं। अतः यह शोधपत्र दीनदयाल जी के बारे में शोध को एक नई दिशा देगा।

पं॰ दीनदयाल जी उपाध्याय का जन्म नगला चन्द्रभानपुर नामक एक छोटे से गाँव में हुआ। वह भारत की मिट्टी से जुड़े व्यक्ति थे और इसलिए उनके विचार एवं दर्शन भी गांधी जी की तरह भारतभूमि से ही जुड़े हुए थे। उनके दर्शन का उद्‌भव एवं विकास भारत भू से जुड़कर और यहां के समाज में रहकर उसको समझकर ही हुआ था। इस संदर्भ में आशीष रावत ने सटीक टिप्पणी की है :–

> 25 सितम्बर 1916 को उत्तर प्रदेश के मथुरा में जन्म लेने वाले पंडित दीनदयाल का स्पष्ट मानना था कि समाजवाद, साम्यवाद और पूंजीवाद व्यक्ति की समग्र जरूरतों का मूल्यांकन किए बिना कोई भी विचार भारत के विकास के अनुकूल नहीं होगा। (21)

पंडित जी की ये सोच गांधी जी के बिल्कुल समीप और नेहरू जी के बिल्कुल विपरीत थी। जवाहर लाल नेहरू ने जो पाश्चात्य मॉडल अपनाया वह गांधी जी की सोच के बिल्कुल विपरीत था। नेहरू जी ने सोवियत संघ की तर्ज पर भारत के विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएं चलाई और इन पंचवर्षीय योजनाओं के तहत बड़े–बड़े बांध बनाये और बड़े–बड़े कारखाने स्थापित किये। इन कारखानों की स्थापना की वजह से भारतीय समाज की संरचना में परिवर्तन हुआ। बड़े–बड़े कारखानों की स्थापना की वजह से नवयुवकों का गाँव से शहर की तरफ पलायन बढ़ा और सदियों से चली आ रही भारतीय संयुक्त परिवार की परम्परा क्षीण पड़ती चली गई। आज से कुछ दशक पूर्व तक भी भारत में वृद्धाश्रम और अनाथालय देखने को नहीं मिलते थे क्योंकि भारत में संयुक्त परिवार की परम्परा थी और संयुक्त परिवार किसी विपत्ति की स्थिति में एक बीमा योजना की तरह काम करता था। इस परम्परा में कोई भी बालक या बालिका अनाथ नहीं था क्योंकि उनकी देखभाल के लिए परिवार के अन्य सदस्य थे। संयुक्त परिवार के सदस्य एक ''सहकारी, आर्थिक, धार्मिक और सामाजिक इकाई'' (चन्द्रशेखर 327) होती है। संयुक्त परिवार एकल परिवार से भिन्न है क्योंकि एकल परिवार का आधार ''पति की पत्नि के प्रति आस्था है, पुत्र की पिता के प्रति नहीं'' (कोंकलिन जार्ज 1445) भारतीय समाज का आधार और सशक्तिकरण का आधार संयुक्त परिवार ही था। संयुक्त परिवार में रहते हुए किसी बुजुर्ग को वृद्धाश्रम (Old Age Home) जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती थी और इस संयुक्त परिवार के विघटन के पीछे यदि कोई सबसे बड़ा कारण है तो औद्योगिकरण ही है। इस मामले में एक शोधकर्ता ने कहा है कि :

> पूरे विश्व में परिवार की संरचना में परिवर्तन हो रहा है और इस धीमे परिवर्तन का झुकाव पाश्चात्य एकल परिवार की तरफ है। इस अवश्यंभावी परिवर्तन का मुख्य कारण औद्योगिकरण पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण और लोकतंत्र का प्रचार है। (खत्री 635)

पंडित दीनदयाल जी ने औद्योगिकरण के प्रभाव को देखा था और वो यह महसूस कर चुके थे कि संयुक्त परिवार का विघटन तो औद्योगिकरण का प्रारंभिक चरण ही है। इसके दूसरे बुरे प्रभाव अभी दृष्टिगोचार होने बाकी हैं। इसीलिए पंडित जी ने महसूस किया कि भारत का भला पश्चिमी मॉडल के पीछे भागने में नहीं अपितु अपना एक स्वदेशी मॉडल विकसित करने में है, एक ऐसा मॉडल जिसको भारतीय सांस्कृतिक ढांचे में आत्मसात किया जा सके और जिसका आधार पूंजी नहीं अपितु मानव हो। ऐसी ही कुछ कल्पना गांधी जी की भी थी। गांधी जी का आर्थिक मॉडल भी मानव केन्द्रित था जिसकी कल्पना उन्होंने चरखे के रूप में की थी। 'चरखा' मात्र 'चरखा' नहीं अपितु इसे भारतीय ग्राम विकास के आधार के रूप में देखना चाहिए।

'चरखा' गांधी जी के अनुसार भारत के लिए उपयुक्त तकनीक थी। गांधी जी के लिए चरखा एक प्रतीक था स्वावलंबन का, सामर्थ्य का और एक ऐसी तकनीक का जो भारत में विकसित हुई थी। गांधी जी किसी भी ऐसी तकनीक को बुरी मानते थे जो केवल कुछ लोगों को अमीर बनाती थी और ये कुछ लोगों की अमीरी का मूल्य था। अन्य लोगोंका दमन बहुसंख्यक लोगों का कुछ लोगों को अमीर बनाने के लिए दमन ही पश्चिमी औद्योगिक नीति का मुख्य सिद्धान्त था। गांधी जी के अनुसार यह पश्चिमी मॉडल भारत के लिए अनुपयुक्त था।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के रूप में भारत को ऐसा व्यक्ति मिला जो कि सही अर्थों में गांधी जी के विचारों का पोषक और उत्तराधिकारी था। गांधी जी औद्योगिकरण के जिन बुरे प्रभावों को देखने के लिए जीवित नहीं बचे, पंडित जी ने उन दुष्प्रभावों को देखा भी और चिन्तन–मनन भी किया। पंडित जी ने पाया कि गांधी जी की विचारधारा इस मामले में बिल्कुल उपयुक्त थी। गांधी जी वास्तव में एक दूर–द्रष्टा थे जो पश्चिमी औद्योगिक मॉडल की असफलता को पहले ही भांप चुके थे, महसूस कर चुके थे।

भारत तेजी से औद्योगिकरण की ओर बढ़ रहा है और उदारीकरण के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था की ये दौड़ और भी तेज हो गई है परन्तु औद्योगिकरण अमीर और दरिद्र के बीच की खाई पाटने में असफल रहा है। ये खाई खत्म होने की बजाय और अधिक चौड़ी होती जा रही है। औद्योगिकरण ने समस्याएं घटाने की अपेक्षा और अधिक बढ़ा दी हैं। महानगरों की स्थापना और इन

महानगरों में लगातार लोगों का काम ढूंढने के लिए आगमन इन महानगरों के आधारभूत ढांचे पर लगातार दबाव डाल रहा है। महानगरों का जीवन विषम होता जा रहा है। भारत ने औद्योगिकरण की चाह में बड़े–बूढ़ों की सीख को भुला दिया है और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आर्थिक दर्शन को किसी अंधेरे गुमनाम कोने में धकेल दिया है।

पं॰ दीनदयाल उपाध्याय जी जानते थे कि गांधी जी का चरखा सम्पूर्ण विश्व का तारणहार बन सकता है और उन लोगों के लिए प्रेरणा बन सकता है जो ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण क्षय एवं दुर्दशा के समाधान के लिए अपना जीवन लगा रहे हैं। लगभग सभी वैज्ञानिक इस बात पर एकमत हैं कि इन समस्याओं का जनक मानव की आराम करने की चाह है। इ.एम. शूमाकर ने इस विषय में टिप्पणी की है : ''हमारे वैज्ञानिकों ने कई ऐसी चीजों को, रसायनों का निर्माण कर लिया है जिनके विरुद्ध कुदरत के पास कोई हथियार नहीं है। कोई ऐसे प्राकृतिक तत्त्व नहीं हैं जो इन्हें तोड़ सकें।'' (शूमाकर 5) इनमें से कुछ रसायन जब खोजे गये तो उन्हें मानवता के लिए वरदान समझा गया था परन्तु बाद में वे पर्यावरण के लिए सबसे बड़ा अभिशाप बन गये। उदाहरण के तौर पर क्लोरोफलोरो कार्बन जब खोजे गये तो इन्हें अद्भुत रसायन मान लिया गया जो मानवता के लिए वरदान थे। परन्तु बाद में पता चला कि यही अद्भुत रसायन ओज़ोन की परत की क्षय के लिए जिम्मेदार थे। इसी तरह का एक उदाहरण पॉलीथीन का भी सामने आता है।

दीनदयाल जी अवगत थे कि अगर भारत से गरीबी मिटानी है तो यह गांधी जी के चरखे के माध्यम से ही संभव है। गांधी जी का चरखा प्रतीक है भारतीय कुटीर ग्रामीण उद्योग का जहां भारत का प्रत्येक गांव स्वयं परिपूर्ण था। गांधी जी के लिए भारतीय ग्रामीण कुटीर उद्योग को पुनर्जीवित होना आवश्यक था और ये पुनर्जीवन गांधी जी के जीवन का एक उद्देश्य भी था। क्योंकि उनके लिए कुटीर ग्राम उद्योग के पुनर्जीवन का अर्थ था गरीबी का उन्मूलन :

> ग्रामीण कुटीर उद्योग का पुनर्जीवन का अर्थ है बढ़ती गरीबी का उन्मूलन। जब हम इन कुटीर उद्योगों को पुनर्जीवित कर लेंगे तो बाकी उद्योग स्वयंमेव पुनर्जीवित हो जाएंगे ..... मैं चरखे को एक नींव बनाऊंगा भारत की समृद्धि की,भारत की अर्थव्यवस्था चरखे के इर्द–गिर्द घूमेगी। (Y.I. 21-5-19, pp 176-77)

चरखा प्रतीक है ''उपयुक्त तकनीक''(शूमाकर 7) उपयुक्त तकनीक के प्रणेता थे ई.एफ. शूमाकर जो कि एक ब्रिटिश अर्थशास्त्री थे जिन्होंने कुछ समय तक भारत और बर्मा में भी काम किया था। उन्होंने अपने ''उपयुक्त तकनीक'' के सिद्धान्त का प्रतिपादन अपनी पुस्तक Small is Beautiful में किया था। उन्होंने ''उपयुक्त तकनीक'' को परिभाषित करते हुए उसके अवयव बताये, जो हैं :– (a) साधारण, (b) छोटी, (c) कम खर्च, (d) अहिंसात्मक। संयुक्त राज्य अमेरिका के तकनीकी विभाग के अनुसार ''उपयुक्त तकनीक'' के अवयव हैं – (a) छोटे स्केल पर, (b) कम ऊर्जा खपत,(c) पर्यावरण हितैषी, (d) मजदूर केन्द्रित, (e) लोकल जनमानस द्वारा कंट्रोल (f) लोकल लैवल पर चलाई जा सकने वाली।

गांधी जी का चरखा भी एक ऐसी ही मशीन का प्रतीक है जो कि चलाने में आसान, मानव श्रम पर आधारित, आसानी से चलने वाला और आसानी से कहीं भी स्थानांतरित किया जा सकने वाला। दीनदयाल जी भी जानते थे कि भारत की रोजगार सम्बन्धी समस्याओं को गांधी जी के चरखे के द्वारा ही हल किया जा सकता है। उन्होंने अपने राजनीतिक दर्शन में यह महसूस किया कि भारत में बेरोजगारी का बड़ा कारण नेहरू द्वारा बड़े कारखानों की स्थापना करना है। ऐसे बड़े कारखानों में मशीनों का मुख्य रोल होने के कारण मजदूरों की आवश्यकता कम पड़ती है और इसी वजह से बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप ले चुकी है और इस समस्या का हल केवल मात्र कुटीर उद्योगों का पुनर्जीवन ही है। इस विषय में Organiser में एक लेख भी उन्होंने लिखा :

> ''पश्चिमीकरण के अलावा, योजनाकार साम्यवाद को देश में लाने के लिए भी प्रतिबद्ध दिख रहे हैं। परन्तु साम्यवाद के उद्देश्य में कोई भी फर्क दिखाई नहीं पड़ रहा क्योंकि साम्यवाद व्यक्तिगत लाभ आर्थिक विषमताओं को दूर करने और सामाजिक न्याय का पक्षधर है। परन्तु साम्यवादी देशों ने इन उद्देश्यों को पाने के जो तरीके अपनाए हैं वो कतई कारगर नहीं हैं। (The Third Plan X-rayed Organiser, 21 August, 1961)

इससे साफ है कि दीनदयाल जी चाहते थे कि भारत एक स्वदेशी मॉडल अपनाये।

दीनदयाल जी पर महात्मा गांधी का प्रभाव केवल उनके आर्थिक चिन्तन तक ही सीमित नहीं था। अपितु वे भी महात्मा गांधी की तरह राजनीति में नैतिक मूल्यों के पक्षधर थे। उन्होंने पारम्परिक राजनीति को एक नया मोड़ दिया और इसे ''भाई भतीजावाद, चाचा–मामा और परिवार केन्द्रित इकाई से कार्यकर्ता केन्द्रित गतिविधि में बदला। (R. Balashankar : An Idealist, An Ideologue, The Indian Express, Sept. 24, 2016)

नैतिकता का एक उदाहरण तब सामने आया जब पंडित जी ने गोरखपुर से लोकसभा का चुनाव लड़ा। उनके समर्थक चाहते थे कि वे लोकसभा क्षेत्र के सभी ब्राह्मणों से चुनाव में मदद की अपील करें। पंडित जी नैतिकता के पक्षधर थे अतः उन्होंने ये बात ठुकरा दी। भारतीय लोकतंत्र के प्रारंभिक दिनों से राजनेताओं ने जातिवाद के नाम पर लोगों का शोषणा किया है। उनके इस अशोभनीय व्यवहार के कारण जातिवाद समाप्त होने के स्थान पर और अधिक मजबूत हुआ है। पंडित दीनदयाल जी के लिए व्यक्तिगत और आम जीवन के चरित्र में कोई अन्तर नहीं था। अगर भारतीय राजनेता पंडित जी के चरित्र का आधा भी अनुसरण कर लें तो भारतीय लोकतंत्र की आधी से अधिक समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी।

उनके आदर्श उनके 1962 के चुनाव विश्लेषण से ही साफ हो जाते हैं :

> भारतीय जनसंघ राजनीति को संवैधानिक मोड़ देना चाहता है। इसके प्रचार और जन आन्दोलनों ने हमेशा संविधान का पालन किया है। हमारे वक्ताओं ने अपने विचार रखते हुए दूसरों की आलोचना अपनी विचारधारा के परिप्रेक्ष्य में ही की है। यह समय है क्योंकि हमारे पास भिन्न नीतियां और कार्यक्रम हैं। जनसंघ स्वार्थ रहित और निडर है परन्तु जनसंघ ने न तो व्यक्तिगत लांछन लगाये हैं और न ही साम्प्रदायिक भावनाएं जातिवाद अथवा क्षेत्रवाद को भड़काया।(http://deendayal-upadhay. org/jansh-2 times)

उपरोक्त कथन दिखाता है कि नैतिकता पंडित जी के चरित्र में रची–बसी थी। वह सही अर्थों में राजनीति के कीचड़ में खिला हुआ एक कमल का फूल थे।

पंडित जी एक ऐसे बुद्धिजीवी थे जिनको भारत और भारतीय जीवन की गहरी समझ थी। उन्हें इस बात का अन्देशा था कि पाश्चात्य मॉडल भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए हलाहल का काम करेंगे। उन्होंने व्यक्तिवादी, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था की भर्त्सना की। उन्होंने साम्यवाद को भी नकार दिया जिसमें व्यक्ति को कुचल कर एक बड़ा हृदय विहीन तंत्र खड़ा कर दिया जाता है। समाज, पंडित जी के अनुसार, व्यक्तियों के बीच किया गया सामाजिक अनुबन्ध नहीं था अपितु समाज स्वयं एक प्राकृतिक जीती–जागती इकाई है जिसकी आत्मा में राष्ट्र बसता है। इसीलिए उन्होंने अपना आर्थिक दर्शन प्रतिपादित किया। यह आर्थिक दर्शन पूंजीवादी और मार्क्सवादी विचारधाराओं को नकारता है। उनके अनुसार भारत में सबसे पहले एक स्वदेशी आर्थिक मॉडल विकसित करने की आवश्यकता है जिसका केन्द्र मानव हो। उनका यह दर्शन मध्यमार्गी है जो पाश्चात्य विज्ञान का स्वागत करता है परन्तु उसकी बहुतायत और मानव को पृथक करने की आलोचना करता है।

निष्कर्ष

अतः दीनदयाल जी के आर्थिक दर्शन में भी गांधी जी के विचार दृष्टिगोचर होते हैं। यह दुर्भाग्य ही है कि गांधी जी के आर्थिक दर्शन को कांग्रेस द्वारा नकार दिया गया जो अपने आप को उनका राजनीतिक उत्तराधिकारी मानती है। गांधी जी के सत्य और अहिंसा के विचारों से सम्पूर्ण विश्व अवगत है, परन्तु ये गांधी जी के दर्शन का एक पहलू मात्र थे, उनके विचारों में और बहुत से उपयोगी विचार थे जिन्हें नकार दिया गया या त्याग दिया गया था। परन्तु आज फिर गांधी जी का दर्शन एक केन्द्र बिन्दु बन गया है। दीनदयाल जी के जयन्ती वर्ष में उनके और गांधी जी के आर्थिक विचार आज फिर से केन्द्र में हैं। दशकों से पाश्चात्य मॉडलों के अनुकरण ने समस्याओं को गंभीर कर दिया है। गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या बढ़ती जा रही है और गरीबी का दानव और विकराल हो गया है, वातावरण प्रदूषण की वजह से जहरीला हो गया है परन्तु भारत के राजनयिक अपनी त्रुटि स्वीकार नहीं करते। उदाहरण के तौर पर आण्विक ऊर्जा को लिया जा सकता है। यद्यपि गांधी जी और पंडित जी आण्विक ऊर्जा के स्थान पर सौर ऊर्जा पर बल देते थे क्योंकि सूर्य भारतीय उपमहाद्वीप में ऊर्जा का एक अनन्त स्रोत है, वातावरण को प्रदूषित नहीं करता और स्थानीय लोगों द्वारा ही सौर ऊर्जा संचालित की जा सकती है। अतः भारतीय सरकार को बहुत बड़ी पूंजी आणविक ऊर्जा में निवेश करने के स्थान पर सौर ऊर्जा में करनी चाहिए क्योंकि इससे भारत की भौगोलिक और वातवरण की परिस्थितियों का लाभ लिया जा सकता है।

यदि हमें गांधी जी और पंडित जी को सच्ची श्रद्धांजलि देनी है तो उनके आर्थिक दर्शन को धरातल पर लाना होगा क्योंकि भारत का भला और भारतीयों का भला इसी में निहित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *फैमली,PP327–333,सोशलफोर्सेज़*
2. *कोंकलिन, जार्ज, एच. (सितम्बर 6, 1969, 4.3) सोशल चेंज एण्ड ज्वांयट फैमली PP 1445–1448, इकोनोमिक एण्ड पालिटिकल वीकली*
3. *खत्री,ए.ए. (1975, वाल्यूम 21) दी एडैपडिट ऐकटैंडिड़ फैमिली इन इंडिया टुडे, PP633–642 जर्नल आफ मैरिज एण्ड फैमिली*
4. *रावत,आशीष (भाद्रपद–कार्तिक 2074, अक्टूबर 2017) पं. दीनदयाल उपाध्याय:विचारों की मुंदरी का अनगढ़ नगीना, PP 21–23, स्वदेशी पत्रिका*
5. *शूमाकर, इं.ऐफ, स्माल इज़ ब्यूटीफुल. Web.<http://www. ee.iitb.ac.in>*